झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Jharkhand

चेड़ी-मनातू, पो. कमड़े, थाना – कांके, रांची- 835222, झारखंड

जुलाई से सितंबर, 2023

हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट

दिनांक 10अगस्त 2023 को झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची के राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से 'विश्वविद्यालय में राजभाषा का क्रियान्वयन कैसे करें' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के हिंदी अधिकारी डॉ. विचित्र सेन गुप्त उपस्थित हुए। डॉ. विचित्र सेन गुप्त ने अपने व्याख्यान में कहा कि किसी भी संस्थान में राजभाषा हिंदी में कार्य करना उस संस्थान के प्रत्येक कर्मचारी का नैतिक दायित्व है। इस दायित्व का महत्त्व तब और भी बढ़ जाता है जब हम संविधान प्रदत्त 'क' राज्य की सूची में आते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का अर्थ अंग्रेजी का विरोध करना नहीं है। राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए, बल्कि यह है कि हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए द्विभाषी पद्धति को भी अपनाया जाए। उन्होंने विश्वविद्यालय के अधिकारियों-कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि फाइल पर अधिक से अधिक टिप्पण एवं प्रारूपण लेखन का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। यदि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारीगण हिंदी में कार्य करना शुरू कर देंगे तब उनके अधीन कार्य कर रहे अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी को भी हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी तथा इससे राजभाषा नीति के अनुपालन में गति भी आएगी। डॉ. विचित्र सेन गुप्त ने अपने व्याख्यान के अंत में झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय में एक अनुवाद समिति गठित करने का भी सुझाव दिया जिसे अंग्रेजी भाषा के पत्रों का हिंदी में अनुवाद किया जा सके।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के.राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी क्षेत्र से आते हैं, इसके बावजूद भी हम अपना कार्य अधिकतर अंग्रेजी में करते हैं। उन्होंने प्रश्न उठाते हुए कहा कि हम हिंदी 'क' क्षेत्र से होते हुए भी हिंदी में काम करने से क्यों बचते हैं, यह चिंता का विषय है। हमें अपनी भाषा में गर्व के साथ से कार्य करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए केवल व्याख्यान आयोजित से काम नहीं चलेगा बल्कि इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के ओएसडी डॉ.जे.एन. नायक ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा कि आजादी के 76 साल बाद भी हम हिंदी को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं, यह सोचनीय और चिंतनीय दोनों हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारे देश में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। इसीलिए हमें इस भाषा में बिना किसी झिझक के कार्य करना होगा तभी हिंदी का कायाकल्प संभव हो पाएगा।

विश्वविद्यालय के प्रभारी हिंदी अधिकारी डॉ. उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने इस कार्यशाला की महत्ता और उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी बेहद सरल और सहज भाषा है। इसे जटिल बनाना ठीक नहीं है, अन्यथा अंग्रेजी अपनी जड़ जमाकर बैठती जाएगी। उन्होंने कहा कि भले ही हिंदी अंग्रेजी के साथ देश की राजभाषा हो लेकिन संपूर्ण राष्ट्र की भाषा बनने की इसमें भरपूर क्षमता है। इस भाषा का निरंतर प्रयोग से ही इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाया सकता है।

इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो.कुंज बिहारी पंडा, उप-कुलसचिव श्री उज्जवल कुमार, पीआरओ नरेंद्र कुमार, सहायक कुलसचिव नफीस अहमद खान, जयेश कुमार, अभ्युदय अनुराग, रविकांत, शोएब, अजय कुमार आदि के अलावा विश्वविद्यालय के अनेक कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन प्रभारी तथा धन्यवाद ज्ञापन उप-कुलसचिव श्री अब्दुल हलीम ने किया।

रिपोर्ट : डॉ.उपेंद्र कुमार

झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Jharkhand
चेड़ी-मनातू, पो. कमड़े, थाना – कांके, रांची- 835222, झारखंड

मंचासीन अधिकारीगण

श्री के.के.राव, कुलसचिव

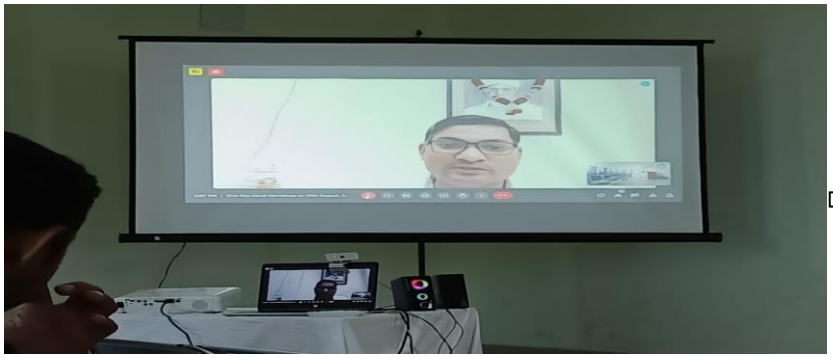

⇨ **डॉ.विचित्र सेन गुप्त, हिन्दी अधिकारी, का.हि.वि.वि**

श्री अब्दुल हलीम, उप-कुलसचिव

डॉ. उपेन्द्र कुमार, हिन्दी अधिकारी

झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Jharkhand
चेड़ी-मनातू, पो. कमड़े, थाना – कांके, रांची- 835222, झारखंड

दैनिक जागरण -11.08.23

राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए

जासं, रांची : सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड के राजभाषा प्रकोष्ठ ने विश्वविद्यालय में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला सीयूजे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। कार्यशाला की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डा. विचित्र सेन गुप्त उपस्थित रहे। डा. विचित्र सेन ने कहा कि राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए बल्कि यह है कि हिंदी को बढ़ावा देते हुए द्विभाषी पद्धति को अपनाई जाए। उन्होंने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को ले सीयूजे के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी तथा प्रारूपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। उन्होंने सीयूजे में अनुवाद समिति का गठन करने का सुझाव दिया। कुलसचिव केके राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी होते हुए भी अधिकतर कार्य अंग्रेजी में करते हैं। उन्होंने प्रश्न उठाते हुए कहा कि हम हिंदी के क्षेत्र में होते हुए भी हिंदी में काम करने से बचते हैं। ओएसडी डा. जेएन नायक ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा कि आजादी के 76 साल बाद भी हम हिंदी को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं, यह हमारे लिए सोचनीय है। सीयूजे के हिंदी अधिकारी डा. उपेंद्र कुमार सत्यार्थी ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है।

हिन्दुस्तान– 11.08.23

हिंदी को बढ़ावा दें, द्विभाषी पद्धति को अपनाएं: डॉ सेन

रांची, वरीय संवाददाता। केंद्रीय विवि झारखंड के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विवि में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें विषय पर कार्यशाला का आयोजन गुरुवार को हुआ। काशी हिंदू विवि के हिंदी अधिकारी डॉ विचित्र सेन ने कहा कि राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए, बल्कि यह है कि हिंदी को बढ़ावा देते हुए द्विभाषी पद्धति को अपनाया जाए।

उन्होंने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को लेकर विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी तथा प्रारूपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। उन्होंने विवि में अनुवाद समिति का गठन करने का सुझाव दिया।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव केके राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी होते हुए भी अधिकतर कार्य अंग्रेजी में करते हैं। ओएसडी डॉ जेएन नायक व हिंदी अधिकारी डॉ उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने हिंदी और राष्ट्रभाषा पर अपनी बातें रखीं। मौके पर प्रो कुंज बिहारी पंडा, उप कुलसचिव उज्जवल कुमार, पीआरओ नरेंद्र कुमार उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर – 11.08.23

विश्वविद्यालय में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें विषय पर कार्यशाला का आयोजन

टिप्पणी तथा प्रारुपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें : डॉ. विचित्र सेन

प्रातः आवाज

मनातू गुरुवार को झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा 'विश्वविद्यालय में राजभाषा क्रियान्वयन कैसे करें' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला की शुरुआत दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ के रूप में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डॉ.विचित्र सेन गुप्त उपस्थित हुए। इस अवसर पर डॉ. विचित्र सेन ने अपने व्याख्यान में कहा कि राजभाषा नीति का उद्देश्य यह नहीं है कि अंग्रेजी को समाप्त कर दिया जाए बल्कि यह है कि हिंदी को बढ़ावा देते हुए द्विभाषी पद्धति को अपनाया जाए। उन्होंने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को लेकर विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी तथा प्रारूपण का कार्य हिंदी में करने की कोशिश करें। इसके साथ उन्होंने विश्वविद्यालय में अनुवाद समिति का गठन करने का सुझाव दिया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री के.के.राव ने कहा कि हम हिंदी भाषी होते हुए भी अधिकतर कार्य अंग्रेजी में करते हैं। उन्होंने प्रश्न उठाते हुए कहा कि हम हिंदी 'क' क्षेत्र में होते हुए भी हिंदी में काम करने से बचते हैं।

विश्वविद्यालय के ओएसडी डॉ.जे.एन. नायक ने मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए कहा कि आजादी के 76 साल बाद भी हम हिंदी को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं। यह हमारे लिए सोचनीय है। विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डॉ.उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' ने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है और इस भाषा का निरंतर प्रयोग ही हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिला सकता है। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर प्रो.कुंज बिहारी पंडा, उप-कुलसचिव श्री उज्जवल कुमार, पी आर ओ नरेंद्र कुमार आदि के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ.उपेंद्र कुमार 'सत्यार्थी' तथा धन्यवाद ज्ञापन उप-कुलसचिव श्री अब्दुल हलीम ने किया।

प्रभात खबर E Paper

होम राज्य मनोरंजन लाइफस्टाइल ध

सीयूजे में हिंदी कार्यशाला: BHU के हिंदी अधिकारी डॉ विचित्र सेन गुप्त ने बताया राजभाषा नीति का उद्देश्य

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी अधिकारी डॉ विचित्र सेन गुप्त ने हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग को लेकर विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को सुझाव देते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा टिप्पणी हिंदी में करने की कोशिश करें.

By GuruSwarup Mishra |
Updated Date Thu, Aug 10, 2023, 8:49 PM IST